# पाठ–7

# नींद उचट जाती है

## कवि– नरेन्द्र शर्मा

**कवि परिचय**– श्री नरेन्द्र शर्मा का जन्म 1923 में उ.प्र. के बुलंदशहर जिले में हुआ। प्रांरभिक शिक्षा यही से प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने इलाहाबाद से एम.ए. किया। इन्होंने फिल्म जगत में भी लेखन कार्य किया। 1984 में इनकी मृत्यु हो गई

**रचनाएं** – 'प्रभात फेरी', 'पलाशवन', 'प्रीति कथा', 'कामिनी', 'मिट्टी के फूल', 'हंसमाला', 'रक्त चंदन', 'कदली वन', 'द्रौपदी', 'प्यासा निर्झर', 'उत्तर जय' आदि अनेक रचनाएँ लिखी।

**काव्यगत विशेषताएँ** – इन्होंने आम जन–जीवन से जुड़ी कहानियाँ, कविताएँ लिखी। समाज की बुराईयों, विषमताओं को इन्होंने अपनी कविताओं में उठाया है। इन्होंने छायावादी, प्रगतिवादी दोनों प्रकार की रचनाएँ रची।

श्री नरेन्द्र शर्मा की भाषा सरल, सहज व मधुर है। इनकी भाषा में प्रेरक तत्व की प्रधानता मिलती हैं जो पढ़ने वालों को दृढ़ निश्चयी बनाती है। इनकी भाषा में कोमलता व कठोरता दोनों भाव विद्यमान है।

**कविता का परिचय** – कवि नरेन्द्र शर्मा द्वारा रचित कविता 'नींद उचट जाती है' एक व्यक्ति और समाज के भीतर अवसाद बेचैनी, निराशा, सन्नाटा, चिन्ताओं के भावों की कविता है। यहाँ कवि ने इस सभी नकारात्मक भावों को व्यक्त करने के लिए रात, अंधेरे, नींद न आना आदि शब्दों को प्रतीक रूप में लिया है। कवि ने कविता में जिस अंधेरे की बात की है वह दो स्तर पर है। एक व्यक्ति के स्तर पर और दूसरा समाज के स्तर पर। व्यक्ति पर यह अंधेरा, उसकी निराशा, चिन्ता, बुरे सपने, बेचैनी आदि के रूप में है। जो समाज के अंधेरे के रूप में प्रतिबिम्बित हुई है। अर्थात् समाज में अंधेरे के रूप में विषमता, चेतना व जागृति का अभाव, विकास न होना, शोषण, छल, कपट विद्यमान हैं जिसके फलस्वरूप समाज में विसंगति बढ़ती जा रही है। और इन्हीं विसंगति के परिणामस्वरूप समाज के व्यक्ति की नींद उचट जाती है। कवि जीवन में दोनों स्तरों के अंधेरों को दूर करने की बात करता है। वह चाहता है कि समाज में जागृति, चेतना फैले और सभी के जीवन से अंधेरा दूर हो जाए।

मूलभाव/व्याख्या बिंदु – कविता में एक ऐसी बात का कवि वर्णन करता है जब अचानक बुरे और डरावने सपने देखने के कारण कवि की नींद खराब हो जाती है नींद खराब होने के बाद रात लंबी हो जाती है। नींद उचट जाने के बाद कवि यह अनुभव करता है हृदय में जो डर है उससे अधिक भयानक बाहर का अंधेरा है। बार–2 सुबह होने को है ऐसा लगता है, लेकिन हर बार, यह आभास ही होता है। बाहर के अंधेरे को

देखकर मन में दुश्चिंता घर कर लेती है, कुत्ते, गीदड़ की आवाज वातावरण को और भयानक बना रही है।

सामाजिक व्यवस्था व कुरीति के बारें में सोच–सोच कर कवि फिर सोना चाहता है। परन्तु जब तक धरती पर अंधेरा व्याप्त है। उन्हें न तो उस करवट नींद आ रही है, न दूसरी करवट नींद आ रही है। अर्थात् बहुत बेचैनी है।

वह रात भर करवटें बदलते हैं, किंतु अंधेरा करवट नहीं बदलता अर्थात् सुबह नहीं होती। लगातार जगने से एक पागलपन–सा छा गया है। समय रुकता–सा प्रतीत हो रहा है। सिर्फ इसी आशा में सांस अटकी है, कि बस सुबह होने को है।

कवि रात भर जागने को जागरण जागृति नहीं मानते अपितु इसे नींद न आने की समस्या कहते हैं उनका मानना है कि जब तक इस धरती पर अंधेरा व्याप्त है प्रकाश इसके चारों तरफ चक्कर काट रहा है। पर वह पास नहीं आ रहा है । इसी प्रकार कवि के अंतर की आँखो के आगे चट्टान (अंधेरे) की है। अर्थात् समाज का अंधेरा अभी दूर नहीं हुआ हैं।

## कविता पर आधारित प्रश्न

### 'नींद उचट जाती है''

1. कविता के आधार पर बताइए कि कवि की दृष्टि में बाहर का अँधेरा भीतरी दुःस्वपनों से अधिक भयावह क्यों हैं?

उत्तर– कवि ने भीतर के दुःस्वप्नों से अधिक भयावह बाहर के अंधकार को माना है। यह अंधेरा मिटने का नाम ही नहीं लेता और उषा नहीं आती। कवि ने भीतर के दुःस्वप्नों से भयानक बाहर के अंधकार को माना है इसका कारण यह है कि उसके भीतर तो मात्र उसकी निराशा एवं अवसाद का भाव हैं परन्तु बाहर सारे संसार की भीषण कठिनाईयां एवं विसंगतियाँ हैं जो उसके व्यक्तित्व दुःख की अपेक्षा अधिक कष्टदायक है।

2. अतंर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती हैं पंक्ति में 'अन्तर्नयन और 'तम की शिला' से कवि का क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर– इस पंक्ति में अंतर्नयन से कवि का तात्पर्य है–आंतरिक चेतना। 'तम की शिला से तात्पर्य है–मन के अन्दर उपस्थित अवसाद व निराशा का भाव। यहाँ कवि का आशय यह है कि वर्तमान परिवेश में मनुष्य के हृदय में व्याप्त निराशा और अवसाद चट्टानों की तरह हमारी अन्तः चेतना के द्वार को बन्द कर हमारे भीतर अंधेरा भर देते हैं।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

**करवट नहीं बदलना.....आस रात भर भटकाती है।**

**प्रसंग**–कवि –प्रगतिवादी कवि नरेन्द्र शर्मा जी है।

कविता– ''नींद उचट जाती है''

**व्याख्यां**–प्रस्तुत पद्यांश में कवि यह बताने का प्रयास कर रहा है कि उसे नींद नहीं आ रही है। और वह निरन्तर करवट बदल रहा है जिसका कारण है उसके भीतर व बाहर व्याप्त अंधकार। वह आगे कहता है कि उसके करवट बदलने से अंधकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है अर्थात् अंधेरा अपनी करवट नहीं बदलता है। वह यह कहने का प्रयास कर रहा है कि उसके करवट बदलने का कारण उसकी बेचैनी है जो समाज में व्याप्त असमानता से उत्पन्न हुई है जिसकी वजह से वह करवट बदलता है। परन्तु समाज की परिस्थितियों, विषमताओं, सामाजिक स्थितियाँ बिल्कुल बदलने का नाम नहीं ले रही है। अंधेरे से प्रकाश या निराशा से आशा की ओर कोई नहीं बढ़ रहा है। मन में अभी भी उतावलापन, बेचैनी है। मन स्थिर नहीं है। और मन में असंतोष और बेचैनी व चिन्ताएँ है जिसके कारण रात भर बिना पलक झपकाए जागना पड़ता है। और अब उसकी आँखें भी निराश होकर थम गई हैं, रुक गई है।

अब केवल उसकी साँसे इसी आस में रूकी हुई है कि कभी न कभी तो उसके मन का व समाज का अंधकार दूर होगा। अर्थात् समाज की परिस्थितियाँ बदलने लगेंगी और परिणामस्वरूप उसके भीतर का अंधेरा भी दूर होगा।

**शिल्प सौन्दर्य**–1. भाषा–सरल, सहज, भावानुकूल

2. बोली–खड़ी बोली

3. शैली–प्रतीक शैली

4. छंद मुक्त कविता

**काव्य–सौंदर्यः–**

**भाव पक्ष**– बाहर का अंधेरा तो सूरज निकलने पर खत्म हो जायेगा किंतु हमारे अंदर जो अन्याय, विषमता का अंधेरा है वो कैसे खत्म होगा।

कला पक्ष – 1. तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

2. भाषा सरल, सरस, सुबोध है।

3. भाषा में लय और गेयता है।

**अभ्यास कार्य**

**निम्न पद्यांशों की व्याख्या करो :–**

1. मन होता है.....करवट आती है।
2. जागृति.....तम की हट पाती है।

**प्रश्नोत्तर–**

1. कविता के आधार पर बाताओ कि बाहर का अंधेरा भीतरी दुःस्वप्नों से अधिक भयावह क्यों हैं?
2. बाहर के अंधेरे को देखकर कवि की क्या दशा होती है?
3. रातभर कवि को कौन–सी आस भटकाती रहती हैं?
4. कवि चेतन से जड़ होने की बात क्यों कहता है?
5. अंदर का भय कवि के नयनों को सुनहरी भार का अनुभव क्यों नहीं होने दे रहा है?
6. गहरी निंद्रा में खोने की इच्छा कवि क्यों कर रहा है?
7. अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट जाती है 'तम की शिला' से क्या तात्पर्य है।